21वीं शताब्दी के महिला कथाकारों की आत्मकथाओं में संवेदना और शिल्प

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

की पी-एच.डी. उपाधि के लिए प्रस्तावित

शोध-प्रारूप

संकाय-मानविकी

विषय-हिन्दी

शोध निर्देशक

डॉ० आनन्द प्रकाश गुप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

अनुसंधायिका

सुभद्रा कुमारी

सुभद्रा कुमारी

एम०ए० हिन्दी

तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर

जे०आर०एफ०

पैट क्रमांक-

21वीं शताब्दी के महिला कथाकारों की आत्मकथाओं में संवेदना और शिल्प

- ## भूमिका :

आधुनिक हिंदी साहित्य के फलक पर महिला कथाकारों का विशिष्ट स्थान रहा है। इन महिला कथाकारों ने अपने सृजन यात्रा से साहित्य के सभी गद्य विधाओं को संस्पर्श किया है। इन गद्य विधाओं में आत्मकथाएँ हमारे जीवन के परतों को प्याज के छिलकों की तरह परत–दर–परत खोलती ही नही हैं बल्कि संवेदना और शिल्प के स्तर पर नये आयामों एवं मूल्यों का सृजन भी करती है। आत्मकथाओं की सृजनात्मक संरचना की दृष्टि से मेरी नजर सर्वप्रथम मिस्त्री लेखक इहाफ हसन पर सहसा चली जाती है जिन्होने कहा था "क्या कोई जीवन कभी शब्दों में अनूदित हो सकेगा?...क्या एक जीवन जिसका अभी अन्त नहीं हुआ है,...भी खुद को पूरी तरह समझ सकेगा?...क्या हम किसी आत्मकथा के भीतर हकीकत और फसाने का फर्क करने में कामयाब हो पाएँगे...? क्या स्मृति और कल्पना में बहनापा नहीं होता, क्या नॉस्टेलिया या आत्म–छलना से यादों की नातेदारी नहीं होती...? इसलिए क्या आत्मकथ किसी तलाश का रिकॉर्ड होने के बजाए खुद में एक तलाश नहीं होती?...क्या वह खुद को व्यक्त करने या खुद को जानने से कही ज्यादा खुद की रचना का अध्यवसाय नहीं होती?...और क्या यह तलाश, खुद को रचने के लिए की गई मेहनत जीवन–मरण के चक्र में फँसे असली कर्ता पर अपना असर नहीं डालती?" उपर्युक्त स्थापना आत्मकथा जैसी संवेदनशील विधा को लेकर कई प्रश्नों को सामने रखती है। शायद यही कारण है कि अमेरिका में रहकर अंग्रेजी लेखन करनेवाले मिश्र लेखक इहाब हसन ने अपनी बहुचर्चित आत्मकथा प्रकाशित होने के सात–आठ साल बाद उठाये थे। शायद उन्हें लग रहा था कि आत्मकथा के आइने में उन्होंने खुद को नयी आँखों में देख लिया था। इस तरह स्पष्ट है कि

आत्मकथा के बैरोमीटर से अपने ही बदलाव की डिग्री का पता लगाते हुए इहाब हसन का मकसद जो भी रहा हो, उनका यह कथन हमें आत्मकथा की विधा में गंभीरतापूर्वक झांकने की एक उपयोगी दृष्टिबोध तो अवश्य दे जाता है।

भारतीय वाङमय में जब आत्मकथा लेखन की बात की जाती है तो सर्वप्रथम बौद्ध-जीवन और दर्शन में थेरीगाथा संभवत: महिलाओं द्वारा रचित सबसे प्राचीन ग्रन्थ है, लगभग पच्चीस सौ वर्ष पुराना। इसमें स्त्रियों की मुक्ति–कामना को तरह–तरह से व्यक्त किया गया है। जो भी बंधन उसे बाँधता है, उसे वह तोड़ना चाहती है। यह प्रयत्न आज भी जारी है।

आत्मकथा की छवि सत्य वाली है। सच जानने की उत्कट आकांक्षा पाठक समुदाय में है। आत्मकथाएँ कोई निर्जन द्वीप से उठी चीख नहीं हैं। वे समाज–समुद्र के तूफान में घिरे मनुष्य की चीख होती है। श्रेष्ठ आत्मकथाएँ हमारा विरेचन करती हैं। जीवन रणनीति सिखलाती है। विश्वास जगाती हैं। मनुष्य की अपराजेयता में विश्वास जगाती है। उनमें प्रेरक–तत्व बहुत सक्रिय होता है, क्योंकि वो रोल मॉडल का ब्लू प्रिंट होती है। आधुनिक काल में पहले बनारसी दास जैन ने 'अर्ध कथानक' शीर्षक से 19वीं शताब्दी में सम्वत् 1643 से 1686 तक का जीवन–वृत पद्य शैली में प्रस्तुत किया है। गद्य में आत्मकथा लिखने की परम्परा का सूत्रपात भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा हुआ। उन्होंने 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' शीर्षक में एक आत्मकथा लिखनी आरम्भ की थी, जिसमें उन्होंने अपने परिवार आदि का परिचय दिया है। डॉ० श्यामसुन्दर दास, डॉ० हरिवंश राय 'बच्चन', यशपाल, सेठ गोविंदास, रामविलास शर्मा की आत्मकथा भी उल्लेखनीय है। इस तरह स्पष्ट है कि आत्मकथा साहित्य की सर्वाधिक संवेदनशली विद्या है। साहित्यकार अपने अनुभवों के कोष से घटित घटनाओं का यथार्थ अभिव्यक्ति द्वारा जन-सामान्य को भाव-बोध से सम्प्रक्त करता है। 21वीं शताब्दी में महिला आत्मकथा लेखन अत्यन्त ही संवेदना की चासनी से अनुस्यूत है निश्चय ही

महिला आत्मकथा लेखन शोध के क्षेत्र में नये मूल्यों की स्थापना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण और कारगर सिद्ध हो सकता है।

- ## शोध विषय की आवश्यकता :

भारतीय समाज में नारी की महिमा अविस्मरणीय रही है। वैदिक साहित्य में नारी पूजनीय एवं स्वतंत्र रही, उसका स्थान उच्च था, लेकिन उत्तरोत्तर काल में नारी ने भोग्या का रूप धारण कर लिया है। 19वीं शताब्दी के सांस्कृतिक जागरण के दौरान राजाराम मोहन राय जैसे महान व्यक्तित्व के द्वारा नारी उत्थान के प्रति किये गये प्रयासों के परिणामस्वरूप 1828 ई० सतीप्रथा पर अंग्रेजों द्वारा रोक लगा दी गई। आजादी के संघर्ष में नारी–शक्ति का भी अहम् योगदान और भूमिका का निर्वाह प्रत्यक्ष रूप से दिखाई दिया। नारी को समाज में उत्थान के लिए कई प्रकार की संस्थाओं का सहयोग प्राप्त हुआ। धीरे–धीरे महिलाओं में जागृति के परिणामस्वरूप नारी में सृजनशीलता का भी विकास हुआ, जिसे उसने गीत, गजलों, कविताओं, लेखों, कहानियों आदि के मध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की। धीरे–धीरे समाज में कई प्रतिष्ठित महिलाओं के महत्त्वपूर्ण योगदान के कारण, उन्होंने अपने स्वयं के जीवन के बारे में लेखन प्रारंभ किया, जिससे आत्मकथा लेखन का सूत्रपात हुआ। आत्मकथा में पाठक लेखक के जीवन के अन्तरंग पहलुओं को जानकर प्रभावित होता है और लेखक से मुलाकात का अनुभव करता है। आत्मकथा जिसमें लेखक यथार्थ और वास्तविक तथ्यों को बिना किसी कल्पना अथवा विकृति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ नि:संकोच भाव से प्रस्तुत करता है। आत्मकथाओं के आलोक में ही सम्बन्धित आत्मकथाकार के साहित्यिक व्यक्तित्व का, उसके विकास क्रम का तथा उसके जीवन सर्वस्व का प्रमाणिक परिचय प्राप्त किया जा सकता है। महिलाएँ आत्मकथा में लेखनी चलाने से इसलिए हिचकती थी, क्योंकि जो कुछ कथनीय हैं, उसको

कहने का साहस और कौशल वो जुटा नहीं पाती थीं। वह आत्मकथा लिखकर जोखिम नहीं उठाना चाहती थी। आज उनकी मान्यताएँ टूटती नजर आ रही हैं, उनके स्थान पर नयी मान्यताओं ने जन्म लिया है। रीति–रिवाजों में बंधी नारी के अन्दर इन परंपराओं से निकलने की छटपटाहट उनकी आत्मकथाओं में चित्रित होती है। स्त्री–आत्मकथाएँ स्त्री के आन्तरिक व्यक्तित्व–चित्रण को उजागर करने वाली श्रेष्ठ रचनाएँ है। सर्वप्रथम बांग्ला, मराठी और पंजाबी में लिखित स्त्री आत्मकथाओं से प्रेरित होकर हिन्दी की लेखिकाएँ आत्मकथा लेखन में प्रवृत्त हुई। महिला आत्मकथा साहित्य का सर्वप्रथम सूत्रपात भी बांग्ला भाषा में 'आभार जीबोन' नामक आत्मकथा से सन् 1876 ई० में हुआ, जिसकी लेखिका रससुंदरी देवी है।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में फरवरी सन् 1882 में मुंशी कन्हैयाला अलखधारी द्वारा लुधियाना से प्रकाशित 'सीमन्तनी उपदेश' एक अज्ञात हिंदू लेखक (स्त्री) द्वारा लिखित नवजागरण काल की महत्वपूर्ण पुस्तक है। प्रसिद्ध विचारक डॉ० धर्मवीर ने अपने शोधां के आधार पर सम्पादित करके इस पुस्तक को 2004 में पुन: प्रकाशित कराया। तत्कालीन नारी जागरण का यह एक महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। लगभग दो सौ वर्ष पूर्व लेखिका ने स्त्रियों के प्रति होते आ रहे पारिवारिक एवं सामाजिक जुल्मों, उनके धर्म–अधर्म, उत्पीड़ित वैधव्य तथा पुरुष और स्त्रियों की गैर–बराबरी के विषय में अनेक प्रशन उठाये थे।

पंजाब की मशहूर लेखिका अमृता–प्रीतम की 'रसीदी टिकट' समूचे स्त्री आत्मकथा साहित्य में अग्रपांक्तेय रचना है, जिसमें स्त्री–विशर्म एवं बोल्ड लेखन का उदाहरण पहली बार मिलता है। सन् 1932 में प्रेमचंद जी ने 'हंस' की आत्मकथा अंक प्रकाशित करके अल्पख्यात, प्रख्यात, मूर्धन्य बावन साहित्यकारों के आत्मकथ्य प्रकाशित किए थे। इस अंक में महिला लेखिकाओं श्रीमती दिनेश नन्दिनी, श्रीमती देवी, शिवरानी देवी, श्रीमती रामेश्वरी देवी मिश्र के

संक्षिप्त आत्मकथा प्रस्तुत हुए हैं। प्रतिभा अग्रवाल की आत्मकथा 'दस्तक'(1990 ई०), 'मोड़ जिन्दगी का'(1996 ई०), कुसुम अंचल की आत्मकथा 'जो कहा नहीं गया' (1996 ई०), कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नही है दिल मेरा', पद्मा सचदेवा की आत्मकथा 'बूंद वावड़ी' (1996 ई०) शीला झुनझुनवाला की आत्मकथा 'कुछ कही कुछ अनकही' आदि महत्वपूर्ण आत्मकथा साहित्य है।

21वीं शताब्दी के महिला कथाकारों की आत्मकथाएँ नयी संवेदना एवं नये भाव–बोध से सपृक्त है, 2009 में प्रकाशित 'मैत्रेयी पुष्पा' की 'कस्तूरी कुण्डल बसै' ऐसा ही आत्मकथात्मक उपन्यास है जिसमें लेखिका स्वयं स्वीकार करती है कि इसे उपन्यास कहूँ या आप बीती। लेखिका आगे कहती है कि यह मेरी और मेरी माँ की कहानी है जिसमें प्रेम, घृणा लगाव और दुराब की कहानियाँ रची–बसी है। लेखिका इस आत्मकथा में यह भी लिखती है कि कुछ घटनाएँ मेरे जन्म से पहले की थी और कुछ जन्म के बाद। जन्म से पहले की घटनाएँ माँ के मुख से तब सुनी थी जब स्त्री–जीवन की संवेदना को समझने की आवश्यकता पड़ी।

इसी कड़ी में दूसरी स्त्री आत्मकथा 'हादसे' (2005 ई०) है जो सुप्रसिद्ध आदिवासी जीवन की लेखिका रमणिका गुप्ता के द्वारा लिखा गया है। स्वयं रमणिका गुप्ता घर में ही बाल्यकाल से लेकर युवावस्था और आगे के जीवन में कई हादसों से गुजरती है। स्त्री–जीवन की विसंगतियों और अमानवीय घटनाओं का सामना करती है अपने जीवन में घटित घटनाओं का जीवंत चित्रण अपनी इस आत्मकथा में करती है। सचमुच झंझावातों और संघर्षों के बीच से अपना रास्ता निकालकर जीवन पथ पर आगे बढ़ती रही हैं। हादसे आत्मकथा में उनके जीवन की मार्मिकता का जीवंत चित्र सुरक्षित है।

21वीं शताब्दी के स्त्री आत्मकथाओं में 2012 में प्रकाशित मैत्रेयी पुष्पा का सुप्रसिद्ध आत्मकथा 'गुड़िया भीतर गुड़िया' है। यह आत्मकथा 'कस्तूरी कुण्डल बसे' की बाद की घटनाओं

पर आधारित है। इस रचना में भी एक ओर स्त्री जीवन की मार्मिक घटनाएँ तो संकलित है ही साथ ही नारी–जीवन की संघर्षों का भी जीवंत दस्तावेज है। नारी मन की सूक्ष्म संवेदना का सुन्दर विन्यास इस आत्मकथा में है।

'अन्या से अनन्या' (2010 ई०) आत्मकथा 21वीं शताब्दी की स्त्री आत्मकथाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इस आत्मकथा में प्रभा खेतान ने अपनी जीवन में घटित घटनाओं का पूरी दृढ़ता के साथ अपनी इस आत्मकथा में उपस्थापित किया है। सचमुच पितृसत्तात्मक समाज में नारियाँ किस तरह व्यवस्था के आवे में तपती है, संघर्ष करती हे, विपरीत परिस्थितियों के झंझावतों ने पिसती है का जीवंत चित्र उपस्थिापित है। इतना ही नहीं इस आत्मकथा में लेखिका ने यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि पितृसत्तात्मक समाज की चुनौतियाँ नारी-जीवन को किस प्रकार क्षरित करती है?

2015 में रमणिका गुप्ता की दूसरी आत्मकथा आपहुदरी प्रकाशित हुई, इस आत्मकथा में भी एक जिद्दी और साहसी स्त्री के रूप में स्वयं को स्थापित करती है, सचमुच उनके जीवन में जो घटनाएँ घटी उनका जीवंत और सजीव चित्र उपस्थापित है। स्त्री जीवन की पीड़ा और दंश को समाज के सामने पूरी दृढ़ता से रखती है, यह क्षमता और साहस तो केवल रमणिका गुप्ता में ही हो सकता है। वर्ष 2015 में ही डॉ० निर्मला जैन की आत्मकथा 'जमाने में हम' प्रकाशित हुई है। वह स्वयं स्वीकार करती है कि कभी–कभी कोई घटना आकस्मिक रूप से उत्प्रेरक का काम करती है। विस्मृति का आवरण हटाकर अतीत के सामने खड़ा कर देती है, ठीक वही, जहाँ से जिंदगी की शुरूआत हुई थी उस क्षण अगर कुछ ऐसा बोध हो तो कहीं कुछ नहीं बदला है : समय वही ठिठक कर खड़ा है, जीवन के एक टुकड़े को अपनी आगोश में लिए जस का तस तो पहली प्रतिक्रिया लगभग अबाक् हो जाने की होती है और दूसरी अपनी जीवन–यात्रा की लेखा–जोखा करने का यादों के सहारे उस सब से गुजरने की जिसने हमे वैसा बनाया, जैसे हम है। सचमुच निर्मला जैन की

आत्मकथा में चिंतन की नई परिधि है, सृजन का नव्य आकाश है और संवेदना का लहराता महासागर है।

21वीं शताब्दी की स्त्री आत्मकथाओं में 2010 में प्रकाशित चन्द्रकिरण सौनरेक्सा द्वारा रचित ख्यात आत्मकथा "पिंजरे की मैना" है। लेखिका ने इस उपन्यास में अपनी जीवन की घटित घटनाओं को एक–एककर स्मृतियों के वातायन से निकालकर सृजन के धरातल पर पूरी साफगोई के साथ रखने की कोशिश की है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था नि:संदेह स्त्री–जीवन के लिए पिजड़ा ही है और स्त्री जीवन-पर्यंत उस पिजड़े में कैद होकर विवशता, मजबूरी और परिस्थितियों से समझौता कर जीवनपथ पर आगे बढ़ती है। इस तरह 21वीं शताब्दी की स्त्री आत्मकथाओं में जीवन के कई रंग है जो नारियों के अन्तर्मन में उठनेवाली लहरों के पर्याय तो है ही झंझावतों और संघर्षों की जीवंत गाथा को भी प्रतीकित करता है। ऐसी स्थिति 21वीं शताब्दी की स्त्री आत्मकथाओं का संवेदनात्मक धरातल शोध के क्षेत्र में नए द्वार का उद्घाटन करता है। एतदर्थ प्रस्तावित शोध विषय की आवश्यकता स्वयंसिद्ध है।

- **शोध विषय का महत्व :**

20वीं शताब्दी का कालखण्ड हिन्दी साहित्य की दृष्टि से अत्यंत ही समृद्ध रहा है। इस कालखण्ड में साहित्य की अनेक गद्य विधाओं का विकास हुआ। उनमें 'आत्मकथा साहित्य' सर्वाधिक मार्मिक विधा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में सफल रही है। वस्तुत: आत्मकथाएँ साहित्यकार के भोगे हुए यथार्थ का जीवंत सत्यान्वेषण है। साहित्यकार अपने जीवन के तमाम अनुभवों के कोष से नि:सृत घटनाओं का पूरी निष्ठा के साथ अभिव्यक्त करता है। जिसमें ईमानदार अनुभूति के साथ–साथ ईमानदार अभिव्यक्ति भी सन्निहित होता है। 21वीं सदी की महिला आत्मकथाएँ स्त्री–विमर्श की दृष्टि से सर्वाधिक प्रभावी रचनाएँ है। चूँकि ये आत्मकथाएँ महिला

कथाकारों के संश्लिष्ट अनुभवों पर आधारित है। इनमें महिलाओं की पीड़ा, वेदना, विवशता, हर्ष, विषाद, मर्मातंक संवेदना एक साथ सन्निहित है। पिछले दो दशकों में स्त्रियाँ हर क्षेत्र में आगे आयी हैं। उनका दायरा बढ़ा है, वे घर की देहरी लांध कर बाहर निकली है। उनका हर क्षेत्र में दखल एवं सक्रिय भागीदारी दिखाई देती है। उन्होंने हर काम को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया है और अपनी क्षमता का परिचय दिया है। आज इक्कीसवीं सदी में स्त्रियों की दशा–दिशा पर दृष्टिपात करें तो देखते है कि लगभग दो शताब्दियाँ बीत गयी। स्त्री–समाज इन दो सौ सालों में बहुत कुछ बदला है। छः–सात साल की कच्ची उम्र में विवाह, कुलीनता के अभिशाप स्वरूप पति की चिता से बँधी साँसे, बाल–विधवाओं का नारकीय जीवन, सामान्य स्त्री का आँगन भर में सिमटा आकाश, बन्द–कपाटों के बीच बन्द मन–मस्तिष्क के भीतर कोई खुली खिड़की नहीं, अज्ञान–अशिक्षा के अन्धकार में भटकता जीवन, विकट परिस्थितियों के बीच स्त्री ने राह टटोली, दीपक दिखाते हाथों का सम्बल लिया और फिर रोशनी की एक मद्धिम किरण भर पर्याप्त थी रास्ता बनाने के लिए। आज स्त्री–संवेदना के प्रश्न समाज के केन्द्र में है। स्त्री सर्जनात्मकता ने केवल अपना पथ प्रशस्त नही किया, पूरे समाज के सम्मुख मानव जीवन का सर्वोत्तम प्रस्तुत किया। जीवन सार्थक्य के आयाम विस्तारित किये।

रमणिका गुप्ता जी ने अपनी आत्मकथा लिखते समय अपने समय की हर एक विकृति, सड़ी–गली प्रथा या फिर ज्यादतियों का भी जिक्र किया है। 'आपहुदरी', 'हादसे' केवल एक महिला की आत्मकथा नहीं है, बल्कि यह एक तरह का ऐतिहासिक दस्तावेज है जो हर उन कुप्रथाओं विकृतियों का जो उस समय पैदा होने वाली स्त्रियों, खासकर जो सामंती अभिजात्य वर्ग में पैदा हुई, को झेलना पड़ा 'ममता कालिया' जी की संस्मरणात्मक आत्मकथा कितनी शहरों में कितनी बार' के संदर्भ में अखिलेश लिखते हैं कि "कितनी शहरों में कितनी बार" ने निश्चय ही गद्य की गरिमा

को समृद्धि गरिमा और ऊँचाई दी है। सौनरेक्सा की आत्मकथा 'पिंजरे की मैना' में जीवन के 86 वें वर्ष की स्त्री का संघर्ष पारिवारि उत्तरदायित्वों के साथ आगे बढ़ा है। वे कहती है कि वस्तुस्थिति से समझौता करने में ही बुद्धिमानी होती है। तभी तो चनद्रकिरण ने पति के अहं की तुष्टि, घर–परिवार की खींचतान को एक कुशल अभिनेत्री की तरह झेल लिया। प्रवासी साहित्यकार सुषम वेदी की आत्मकथा 'आरोह–अवरोह' में घर की खोज भी है और स्नेल्लित स्मृतियाँ भी। यौवन की देहरी पर पाँव रखती जीवन की अनुभूतियाँ भी है और परम्परा और परिवर्तन के बीच नये देश और नये क्षितिज तलाशती हुई अंतर्जगत की यात्राएँ करती रचनाकार की अनोखी दुनियाँ भी। 'मैत्रेयी पुष्पा' की दो भागो में प्रकाशित आत्मकथाओं का मुख्य मुद्दा पुरुषवादी व्यवस्था द्वारा स्त्रियों पर सदियों से लादी गई गुलामी से मुक्ति और स्त्री सशक्तिकरण है। इन आत्मकथाओं में एक स्त्री के बहु–व्यक्तित्व और एक लेखिका की ईमानदार आत्म–स्वीकृतियों का लेखा–जोखा है।

'तसलीमा जसरीन' की पाँच खण्डों में प्रकाशित आत्मकथा नारीवाद से संबंधित विषयों पर अपने प्रगतिशील विचारों के लिए चर्चित और विवादित रही है। स्त्री के स्वाभिमान और अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए उन्होंने बहुत कुछ खोया, जिसकी पराकाष्ठा थी देश से निकाला। पाँच खण्डों में विभाजित आत्मकथाओं में इन्होंने अपनी व्यथाओं का वर्णन किया है। 'प्रभा खेतान' की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' उनकी भोग हुई जिन्दगी की बेबाक कहानी है। स्त्रियों की सोच आकांक्षाओं, स्वप्नों और संघर्षों की सच्चाइयों से साक्षात्कार करवानेवाली चन्द्रकाला की प्रकाशित आत्मकथात्मक संस्मरण: 'हाशिए की इबारतें। इसमें अगर अंधेरे तहखाने हैं, तो रोशनी के गवाक्ष भी है, चाहों का हिलोरता सागर भी है और प्यास से हाँफता रेगिस्तान भी।

इन आत्मकथाओं में महिलाओं कथाकारों के आत्मकथाओं के विश्लेषण से शोध के क्षेत्र में नए क्षितिज का उद्घाटन संभव है। अतएव प्रस्तावित शोध विषय "इक्कीसवीं शताब्दी की महिला

कथाकारों की आत्मकथाओं में संवेदना और शिल्प" का महत्त्व का सम-सामयिक परिवेश में अस्मिता के मूल्य को स्थापति करने की दिशा में एकाधिकार है।

- ## पूर्वकृत शोध :

मेरी दृष्टि से प्रस्तावित शोध विषय पर स्वतंत्र रूप से शोध-कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है। फिर भी इस दिशा में जो शोध कार्य हुए हैं उसकी सूची निम्नवत है–

1) **ज्योति दभादे विट्ठलराव**– समकालीन स्त्री–आत्मकथाओं में नारी–जीवन, मराठवाड़ा 2012 नि० डॉ० आर०आर० नायडु, हि०वि०, डॉ० बाबासोहब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)।

2) **दिनेश कुमार**– महिला रचनाकारों की आत्मकथाओं में स्त्री–चेतना, 1980 से 2005 तक प्रकाशित हिन्दी तथा उर्दू, पंजाबी, बांग्ला एवं मराठी से अनूदित प्रमुख आत्मकथाओं के संदर्भ में, महर्षि दयानंद 2008 नि० डॉ० रोहिणी अग्रवाल, हि० विभाग, दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक।

3) **कांति कल्याणरवा गायकवाड़**– समकालीन नारी–जीवन और हिन्दी आत्मकथा विशिष्ट महिला आत्मकथाकारों के संदर्भ में मराठवाड़ा, नि० डॉ० गणेशराज सोनाले, हिन्दी विभाग, डॉ० बाबासाहेब अंबेडकर वि०वि० औरंगाबाद।

4) **प्रति दूबे**– स्त्री हिन्दी आत्मकथा–साहित्य : एक अनुशीलन (इक्कीसवीं सदी के विशेष सन्दर्भ में), डॉ० कचना सक्सेना, हि०वि० राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, कोटा विश्वविद्याल, राजस्थान।

5) **मनोहर जमदाडे**– हिन्दी की महिला साहित्यकारों की आत्मकथाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन (21वीं सदी में प्रकाशित), डॉ० राजेनद्र खैरना, हि०वि०, चांदमल तासचंद बोरा महाविद्यालय, शिरूर (महाराष्ट्र)।

• शोध के आधार ग्रंन्थ :

1. झुनझुनवाला शीला, 'कुछ कही कुछ अनकही', दिल्ली, : सारांश, 2000
2. पुष्पा मैत्रेयी, 'कस्तूरी कुण्डल बसै', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2002
3. गुप्ता रमणिका, 'हादसे', दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 2005
4. भंडारी मन्नू, 'एक कहानी यह भी', नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 2007
5. खेतान प्रभा, 'अन्या से अनन्या', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2007
6. पुष्पा मैत्रेयी, 'गुड़िया भीतर गुड़िया', नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2008
7. चंद्रकांत, 'हाशिये की इबारते', नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2009
8. सौनरेक्सा चन्द्रकिरण, 'पिंजरे की मैना', नई दिल्ली : पूर्वादय प्रकाशन, 2010
9. कालिया ममता, 'कितनी शहरों में कितनी बार', नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2010
10. टाकभौंर सुशीला, 'शिकंजे का दर्द' नई दिल्ली : वाणी, 2011
11. बेदी सुषम, 'आरोह–अवरोह', नई दिल्ली : सामयिक, 2017
12. गुप्ता रमणिका, 'आपहुदरी', नई दिल्ली : सामयिक, 2015
13. जैन निर्मला, 'जमाने में हम', नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2015

• शोध की परिकल्पना :

प्रस्तावित शोध विषय "21वीं शताब्दी का स्त्री कथाकारों की आत्मकथाओं में संवेदना और शिल्प के सम्बन्ध में मेरी परिकल्पना है कि 21वीं शताब्दी की आत्मकथाएँ वस्तुत: दुनिया की आधी आबादी के जीवन–संघर्ष का मार्मिक दस्तावेज होने के कारण, उनके अन्तर्मन में

उठनेवाली भावनाओं के ज्वार–भारे का सहज दर्शन संभव है। पितृसत्तात्मक समाज में नारियों की सामाजिक, मार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थिति को समझने में भी प्रतावित शोध प्रारूप सक्षम सिद्ध हो सकेगा।

21वीं शताब्दी का कालखंड भूमंडलीकरण, बाजारवाद और नव्य साम्राज्यवादी मूल्यों के संक्रमण का कालखण्ड है, ऐसी स्थिति में नारियों की भूमिका इस नयी व्यवस्था में बदली है नारियाँ आर्थिक रूप में सम्पन्न हुई है फिर भी पितृसत्तात्मक समाज की वात्याचक्र में पिसती नजर आती है। ऐसी स्थिति में स्त्री लेखिकाओं की आत्मकथाओं के अनुसंधान परक विश्लेषण से नारियों के मर्म और पीड़ा को समझने में अवश्य मदद मिलेंगी।

- ## शोध की प्रविधि :

प्रस्तावित शोध विषय– **“21वीं शताब्दी के स्त्री कथाकारों की आत्मकथाओं में संवेदना और शिल्प”** की प्रविधि विवरणात्मक होगी, जिसमें आगमन और निगमन विधियों का उपयोग संभव है। आगमन विधि से शोध से संबंधित तथ्यों का संकलन किया जा सकेगा। वहीं निगमन विधि से प्रस्तावित अनुसंधान विषय के संभावित निष्कर्ष का विश्लेषण किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त इस शोध में प्रश्नावली और साक्षात्कार विधि का भी उपयोग किया जा सकेगा।

- **प्रस्तावित शोध-प्रारूप निम्न अध्यायों में विभाजित होगा–**

अध्याय एक – 1. हिन्दी आत्मकथा की विकास प्रक्रिया

2. हिन्दी कथेतर गद्य में आत्मकथा की अवधारणा

अध्याय दो – 1. 21वीं शताब्दी की महिला आत्मकथाकारों का परिचय

2. 21वीं शताब्दी की आत्मकथाओं के धरातल

अध्याय तीन – 1. 21वीं शताब्दी की आत्मकथाओं में संवेदना के नए आयाम

2. आत्मकथाओं में चिन्तन का नया धरातल

अध्याय चार – 1. 21वीं शताब्दी की आत्मकथाओं में स्त्री–चेतना

2. आत्मकथाओं में नारी मुक्ति के स्वर

अध्याय पाँच – 1. 21वीं शताब्दी की आत्मकथाओं में भाषा और शिल्प

2. आत्मकथाओं का सम–सामयिक मूल्य

अध्याय छह – **उपसंहार**

1. शोध के निष्कर्ष और मौलिक मान्यताएँ

2. शोध का महत्त्व

परिशिष्ट – 1. संदर्भ ग्रंथ की सूची

2. साक्षात्कार

• प्रस्तावित शोध ग्रंथों की सूची :

1. झुनझुनवाला शीला, 'कुछ कही कुछ अनकही', दिल्ली, : सारांश, 2000
2. पुष्पा मैत्रेयी, 'कस्तूरी कुण्डल बसै', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2002
3. गुप्ता रमणिका, 'हादसे', दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 2005
4. भंडारी मन्नू, 'एक कहानी यह भी', नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, 2007
5. खेतान प्रभा, 'अन्या से अनन्या', दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2007
6. पुष्पा मैत्रेयी, 'गुड़िया भीतर गुड़िया', नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2008
7. चंद्रकांत, 'हाशिये की इबारते', नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2009
8. सौनरेक्सा चन्द्रकिरण, 'पिंजरे की मैना', नई दिल्ली : पूर्वादय प्रकाशन, 2010
9. कालिया ममता, 'कितनी शहरों में कितनी बार', नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2010
10. टाकभौंर सुशीला, 'शिकंजे का दर्द' नई दिल्ली : वाणी, 2011
11. बेदी सुषम, 'आरोह–अवरोह', नई दिल्ली : सामयिक, 2017
12. गुप्ता रमणिका, 'आपहुदरी', नई दिल्ली : सामयिक, 2015
13. जैन निर्मला, 'जमाने में हम', नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2015

1. श्रीवास्तव डॉ० चम्पा, 'हिन्दी का आत्मकथात्क साहित्य', नई दिल्ली, वाणी, 2013
2. सं० कालिया, ममता, 'बीसवी सदी का हिन्दी महिला लेखन (गद्य लेखन)', खंड–3, नई दिल्ली : साहित्य अकादमी 2015।
3. सं० कालिया ममता, 'महिला लेखन के सौ वर्ष 20वीं सदी : गद्य साहित्य, नई दिल्ली : लोकभारती, 2020
4. राजे सुमन, 'हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास', नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 2004

5. सं० गिरी राजीव रंजन, 'स्त्री मुक्ति : यथार्थ और यूरोपिया', अनुज्ञा बुक्स, 2023

6. सिंह नमिता, 'स्त्री–प्रश्न' नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2017

7. डॉ० सियाराम, नवीन क्षितिज में स्त्री विमर्श, नई दिल्ली, ओमेगा, 2012

शोध निर्देशक

डॉ० आनन्द प्रकाश गुप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा

अनुसंधायिका

सुभद्रा कुमारी

सुभद्रा कुमारी

एम०ए० हिन्दी

तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर

जे०आर०एफ०

पैट क्रमांक-